

=====

AVYAKT MURLI

18 / 01 / 90

=====

18-01-90 ओम शान्ति अव्यक्त बापदादा मधुबन

स्मृति दिवस पर अव्यक्त बापदादा के महावाक्य

आज सर्व बच्चों के स्नेही मात-पिता अपने स्नेही बच्चों के स्नेह के दिल की आवाज और स्नेह में अनमोल मोतियों की मालाएं देखे...देख बच्चों को स्नेह का रिटर्न विशेष वरदान दे रहे हैं - "सदा समीप भव, समान समर्थ भव, सदा सम्मन संतुष्ट भव" सबके दिल का स्नेह आपके दिल में संकल्प उठते ही बापदादा के पास अति तीव्रगति से पहुँच जाता है। चारों ओर के देश-विदेश के बच्चे आज प्यार के सागर में लवलीन हैं। बापदादा, उसमें भी विशेष ब्रह्मा माँ बच्चों को स्नेह में लवलीन देख स्वयं भी बच्चों के लव में, स्नेह में समाये हुए हैं। बच्चे जानते हैं कि ब्रह्मा माँ का बच्चों में विशेष स्नेह रहा और अब भी है। पालना करने वाली माँ का स्वतः ही

विशेष स्नेह रहता हो है। तो आज ब्रह्मा माँ एक-एक बच्चे को देख हर्षित हो रही है कि बच्चों के मन में, बुद्धि में, दिल में, नयनों में मात-पिता के सिवाए ओर कोई नहीं है। सब बच्चे "एक बल एक भरोसे से आगे बढ रहे हैं" अगर कहाँ रुकते भी है तो मात-पिता के स्नेह का हाथ फिर से समर्थ बनाए आगे बढा देता है।

आज मात-पिता बच्चों के श्रेष्ठ भाग्य के गीत गा रहे थे। क्योकि आज का दिवस विशेष सूर्य, चन्द्रमा का बैकबोन होकर सितारों को विश्व के आकाश में प्रत्यक्ष करने का दिन है । जैसे यज्ञ की स्थापना के आदि में ब्रह्मा बाप ने बच्चों के आगे अपना सब कुछ समर्पित किया अर्थात् 'विल' की। ऐसे आज के दिवस पर ब्रह्मा बाप ने बच्चों को सर्वशक्तियों की विल की अर्थात् विल पावर्स दी। आज के दिवस नयनों द्वारा और संकल्प द्वारा बाप ने बच्चों को विशेष "सन शोज़ फादर' की बिशेष सौगात दी। आज के दिवस बाप ने प्रत्यक्ष साकार रूप में करावनहार का पार्ट बजाने का प्रत्यक्ष रूप दिखाया। ब्रह्मा बाप भी आज के दिन प्रत्यक्ष रूप में करावनहार बाप के साथी बनै, करनहार निमित्त बच्चों को बनाया और करावनहार मात-पिता साथी बने। आज के दिन ब्रह्मा बाप ने अपनी सेवा की रीति और गति परिवर्तन की। आज के दिवस विशेष ब्रह्मा बाप देह से सूक्ष्म फरिश्ता स्वरूप धारण कर ऊँचे वतन, सूक्ष्मवतन निवासी बने, किसलिए? बच्चों को तीव्रगति से ऊँचा उठाने के लिए। बच्चों को फ़रिश्ते

रूप से उड़ाने के लिए। इतना श्रेष्ठ महत्व का यह दिवस है। सिर्फ स्नेह का दिवस नहीं लेकिन विश्व की आत्माओं का, ब्राह्मण आत्माओं का और सेवा की गति का परिवर्तन ड्रामा में नूँधा हुआ था, जो बच्चे भी देख रहे हैं। विश्व की आत्माओं के प्रति बुद्धिवानो की बुद्धि बने। बुद्धि का परिवर्तन हुआ, संपर्क में आये सहयोगी बने। ब्राह्मण आत्माओं में श्रेष्ठ संकल्प द्वारा तीव्रगति से वृद्धि हुई। सेवा के प्रति 'सन शोज फादर' की गिफ्ट से विहंग-मार्ग की सेवा आरम्भ की। यह गिफ्ट सेवा की लिफ्ट बन गई। परिवर्तन हुआ ना! अब आगे चल सेवा में और परिवर्तन देखेंगे।

अभी तक आप ब्राह्मण -आत्माये अपने तन-मन की मेहनत से प्रोग्राम्स बनाते हो, स्टेज तैयार करने हो, निमंत्रण कार्ड छपाते हो, कोई वी.आई. पी. को बुलाते हो, रेडियो, टी. वी. वालो को सहयोगी बनाते हो, धन भी लगाते हो। लेकिन आगे चल आप स्वयं वी.आई.पी. हो जायेंगे। आपसे बडा कोई दिखाई नहीं देगा। बनी...बनाईं स्टेज पर दूसरे लोग आपको निमंत्रण देंगे। अ प ने तन- मन-धन की सेवाओं की स्वयं ऑफर करेंगे। आपकी मिन्नते करेंगे। मेहनत आप नहीं करेंगे, वह रिक्वेस्ट करेंगे कि आप हमारे पास आओ। तब ही प्रत्यक्षता की आवाज़ बुलंद होगी और सबकी अटेंशन आप बच्चों द्वारा बाप तरफ़ जायेगी। वह ज्यादा समय नहीं चलेगा। सबकी नज़र बाप तरफ़ जाना अर्थात् प्रत्यक्षता होना और जय-जयकार के चारों ओर घंटे बजेगें। यह ड्रामा का सूक्ष्म राज़ बना हुआ है। प्रत्यक्षता के

बाद अनेक आत्माए पश्चाताप करेगी। और बच्चों का पश्चाताप बाप देख नहीं सकता। इसलिए परिवर्तन हो जायेगा। अभी आप ब्राह्मण-आत्माओं की ऊँची स्टेज सदाकाल की बन रही है। आपकी ऊँची स्टेज सेवा की स्टेज के निमंत्रण दिलायेगी। और बेहद विश्व की स्टेज पर जय-जयकार का पार्ट बजायेंगे। सुना, सेवा का परिवर्तन।

बाप के अव्यक्त बनने के ड्रामा में गुप्त राज भरे हुए थे। कई बच्चे सोचते हैं - कम से कम ब्रह्मा बाप छुट्टी तो लेके जाते। तो क्या आप छुट्टी देते? नहीं देते ना। तो बलबान कौन हुआ? अगर छुट्टी लेते तो 'कर्मातीत' नहीं बन सकते। क्योंकि ब्लड-कनेक्शन से पदमगुणा ज्यादा आत्मिक-कनेक्शन होता है। ब्रह्मा को तो कर्मातीत होना था। या स्नेह के बंधन में जाना था? ब्रह्मा बाप भी कहते हैं - ड्रामा ने कर्मातीत बनाने के बंधन में बाँधा। और बाँधा कितने टाइम में ! समय होता तो और पार्ट हो जाता। इसलिए घडी का खेल हो गया। बच्चों को भी अन्जान बना दिया, बाप को भी अन्जान बना दिया। इनको कहते हैं - वाह, ड्रामा वाह! ऐसा है ना। जब "वाह, ड्रामा वाह" है तो कोई संकल्प उठ नहीं सकता। फुलस्टाप लगा दिया ना ! नहीं तो कम-से-कम बच्चे पूछ तो सकते थे कि क्या हो रहा है ? लेकिन बाप भी चुप, बच्चे भी चुप रहे। इसको कहते हैं - ड्रामा का फुलस्टाप। उस घडी तो फुलस्टाप ही लगा ना। पीछे भले क्वेश्चन कितने भी उठे लेकिन उस घडी नहीं। तो "वाह ड्रामा वाह" कहेंगे ना ! 'बाबा-बाबा'

कह बुलाया भी पीछे, पहले नहीं बुलाया। यह ड्रामा की विचित्र नूँध होनी ही थी और होना ही है। परिवर्तनशील ड्रामा पार्ट को भी परिवर्तन कर देता है।

यह सब टीचर्स अव्यक्त रचना है - मैजारिटी। साकार की पालना लेने वाली टीचर्स बहुत थोड़ी हैं। फास्ट गति से पैदा हुईं हो। क्योंकि संकल्प की गति सबसे फास्ट है। आदि रत्न है मुख-वंशावली, और आप हो संकल्प की वंशावली। इसलिए ब्रह्मा की दो रचना गाई हुई हैं। एक मुख वंशावली, एक संकल्प द्वारा सृष्टि रची। हो तो ब्रह्मा की रचना, तब तो ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी कहलाते हो। शिवकुमारी तो नहीं कहलाते हो ना। डबल फोरेनर्स भी सब संकल्प की रचना है। ऐसे तीव्रगति से सब टीचर्स आगे बढ़ रही हो? जब रचना ही तीव्रगति की हो तो पुरुषार्थ भी तीव्रगति से होना चाहिए। सदा यह चेक करो कि सदा तीव्र पुरुषार्थी हूँ वा कभी-कभी हूँ? समझा! अब 'क्या' 'क्यों', का गीत खत्म करो। 'वाह-वाह' के गीत गाओ। अच्छा!

चारों ओर के सर्व स्नेह और शक्ति संपन्न श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा बाप के साथ-साथ तीव्रगति से परिवर्तन के साथी समीप आत्माओं को, सदा अपनी उड़ती कला द्वारा अन्य आत्माओं को भी उड़ाने वाले निर्बन्धन उड़ते पंछी आत्माओं को, सदा 'सन शोज फादर' की गिफ्ट द्वारा स्वयं और सेवा में तीव्रगति से परिवर्तन लाने वाले, ऐसे सर्व लवलीन बच्चों को इस

महत्त्व दिवस के महत्व के साथ मात-पिता का विशेष याद-प्यार और नमस्ते।

हुबली ज़ोन से अव्यक्त बापदादा की मुलाकात

सदा अपने को हर कदम में पद्मों की कमाई करने वाले भाग्यवान समझते हो? यह जो गायन है - हर कदम में पद्म...किसके लिए गायन है? सारे दिन में कितने पद्म इकट्ठे करते हो? संगमयुग बड़े-ते-बड़े कमाई के सीजन का युग है। तो सीजन के समय क्या किया जाना है? इतना अटेंशन रखते हो? हर समय यह याद रहे कि 'अब नहीं तो कब नहीं।' जो घड़ी बीत गई वह फिर से नहीं आयेगी। एक घड़ी व्यर्थ जाना अर्थात् कितने कदम व्यर्थ गये? पद्म व्यर्थ गये! इसलिए हर घड़ी यह स्लोगन याद रहे - 'जो समय के महत्व को जानते हैं वह स्वतःही महान बनते हैं।' स्वयं को भी जानना है और समय को भी जानना है। दोनों ही विशेष है। इस स्मृति दिवस पर विशेष सदा समर्थ बनने का श्रेष्ठ संकल्प किया? व्यर्थ संकल्प, बोल, सब रूप से व्यर्थ को समाप्त करने का दिन है। जब नालेज मिल गई कि व्यर्थ क्या है, समर्थ क्या है- तो नालेजफुल आत्मा कभी भी समर्थ को छोड़ व्यर्थ तरफ नहीं जा सकती । और जिनना स्वयं समर्थ बनेंगे उतना औरों को समर्थ बना सकेंगे। ६३ जन्म गँवाया और समर्थ बनने का यह एक जन्म है। तो इस समय को व्यर्थ तो नहीं करना चाहिए ना! अमृतवेले से

लेकर रात तक अपनी दिनचर्या को चेक करो। ऐसे नहीं कि सिर्फ रात्रि को चार्ट चेक करो लेकिन बीच-बीच में चेक करो, बार-बार चेक करने से चेंज कर सकेंगे। अगर रात को चेक करेंगे तो जो व्यर्थ गया वह व्यर्थ के खाते में ही हो जायेगा। इसलिए बापदादा ने बीच-बीच में ट्रैफिक कंट्रोल का टाइम फिक्स किया है। ट्रैफिक कंट्रोल करते हो या दिन में बिजी रहते हो? अपना नियम बना रहना चाहिए । चाहे टाइम कुछ बदली हो जाय लेकिन अगर अटेंशन रहेगा तो कमाई जमा होगी। उस समय अगर कोई काम है तो आधे घण्टे के बाद करो लेकिन कर तौ सकते हो। घडी के आधार पर भी क्यों चलो। अपनी बुद्धि ही घड़ी हैं, दिव्य बुद्धि की घड़ी को याद करो। जिस बात की आदत पड़ जाती है तो आदत ऐसी चीज है जो न चाहते भी अपनी तरफ खीचेगी । जब बुरी आदत रहने नहीं देती, अपनी तरफ आकर्षित करती है तो अच्छे संस्कार क्यों नहीं अपना बना सकते। तो सदा चेक करो और चेंज करो तो सदा के लिए कमाई जमा होती रहेगी। अच्छा।

QUIZ QUESTIONS

प्रश्न 1 :- सब बच्चे "एक बल एक भरोसे से आगे बढ रहे हैं, वर्णन कीजिये ?

प्रश्न 2 :- आज का दिवस श्रेष्ठ महत्व का दिवस है, क्यों ?

प्रश्न 3 :- बाप के प्रत्यक्षता की आवाज़ बुलंद कैसे होगी ?

प्रश्न 4 :- बाप के अव्यक्त बनने के ड्रामा में कौन से गुप्त राज़ भरे हुए हैं ?

प्रश्न 5 :- इस स्मृति दिवस पर विशेष सदा समर्थ बनने का कौन-सा श्रेष्ठ संकल्प किया ?

FILL IN THE BLANKS:-

(ड्रामा, ऊँची, निमंत्रण, चल, सेवा, स्वयं, संकल्प, बडा, आत्माओं, बच्चे, लवलीन, तीव्रगति, प्यार, परिवर्तन)

1 चारों ओर' के देश-विदेश के _____ आज _____ के सागर में _____ है ।

2 ब्राह्मण _____ में श्रेष्ठ _____ द्वारा _____ से वृद्धि हुई ।

3 आगे _____ आप _____ वी.आई.पी. हो जायेंगे। आपसे _____ कोई दिखाई नहीं देगा ।

4 आपकी _____ स्टेज _____ की स्टेज के _____ दिलायेगी ।

5 परिवर्तनशील _____ पार्ट को भी _____ कर देता है ।

सही गलत वाक्यों को चिन्हित करें:- [✓] [✗]

1 :- सबके दिल का स्नेह आपके दिल में संकल्प उठते ही बापदादा के पास अति तीव्रगति से पहुँच जाता है।

2 :- बुद्धि का परिवर्तन हुआ, संपर्क में आये असहयोगी बने।


3 :- बनी...बनाईं स्टेज पर दूसरे लोग आपको निमंत्रण नहीं देंगे।

4 :- अभी आप ब्राह्मण-आत्माओं की ऊँची स्टेज सदाकाल की बन रही है।

5 :- जो समय के महत्व को जानते हैं वह स्वतः ही महान बनते हैं।

QUIZ ANSWERS

प्रश्न 1 :- सब बच्चे "एक बल एक भरोसे से आगे बढ़ रहे हैं", इस बात को संक्षिप्त में वर्णन कीजिये ?

उत्तर 1 :-  निम्न बिंदुओं के आधार पर यह कह सकते हैं कि सब बच्चे एक भरोसे से आगे बढ़ रहे हैं :-

✍️..① बापदादा, उसमें भी विशेष ब्रह्मा माँ बच्चों को स्नेह में लवलीन देख स्वयं भी बच्चों के लव में, स्नेह में समाये हुए हैं। बच्चे जानते हैं कि ब्रह्मा माँ का बच्चों में विशेष स्नेह रहा और अब भी है।

✍️..② पालना करने वाली माँ का स्वतः ही विशेष स्नेह रहता ही है। तो आज ब्रह्मा माँ एक-एक बच्चे को देख हर्षित हो रही है कि बच्चों के मन में, बुद्धि में, दिल में, नयनों में मात-पिता के सिवाए ओर कोई नहीं है।

✍️..③ सब बच्चे "एक बल एक भरोसे से आगे बढ़ रहे हैं"। अगर कहाँ रुकते भी हैं तो मात-पिता के स्नेह का हाथ फिर से समर्थ बनाए आगे बढ़ा देता है।

प्रश्न 2 :- आज का दिवस श्रेष्ठ महत्व का दिवस है, क्यों ?

उत्तर 2 :- ✍️ आज का दिवस श्रेष्ठ महत्व का दिवस है क्योंकि :-

✍️..① आज मात-पिता बच्चों के श्रेष्ठ भाग्य के गीत गा रहे थे। क्योंकि आज का दिवस विशेष सूर्य, चन्द्रमा का बैकबोन होकर सितारों को विश्व के आकाश में प्रत्यक्ष करने का दिन है। जैसे यज्ञ की स्थापना के आदि में ब्रह्मा बाप ने बच्चों के आगे अपना सब कुछ समर्पित किया अर्थात् 'विल' की।

✍️..② ऐसे आज के दिवस पर ब्रह्मा बाप ने बच्चों को सर्वशक्तियों की विल की अर्थात् विल पावर्स दी। आज के दिवस नयनों द्वारा और

संकल्प द्वारा बाप नै बच्चों को विशेष "सन शोज़ फादर' की बिशेष सौगात दी।

✍️..③ आज के दिवस बाप ने प्रत्यक्ष साकार रूप में करावनहार का पार्ट बजाने का प्रत्यक्ष रूप दिखाया। ब्रह्मा बाप भी आज के दिन प्रत्यक्ष रूप में करावनहार बाप के साथी बनै, करनहार निमित्त बच्चों को बनाया और करावनहार मात-पिता साथी बने।

✍️..④ आज के दिन ब्रह्मा बाप ने अपनी सेवा की रीति और गति परिवर्तन की। आज के दिवस विशेष ब्रह्मा बाप देह से सूक्ष्म फरिश्ता स्वरूप धारण कर ऊँचे वतन, सूक्ष्मवतन निवासी बने। बच्चों को तीव्रगति से ऊँचा उठाने के लिए। बच्चों को फ़रिश्ते रूप से उड़ाने के लिए। इतना श्रेष्ठ महत्व का यह दिवस है।

प्रश्न 3 :- बाप के प्रत्यक्षता की आवाज़ बुलंद कैसे होगी ?

उत्तर 3 :-✍️ बाप के प्रत्यक्षता की आवाज़ कुछ इसप्रकार बुलंद होगी :-

✍️..① अभी तक आप ब्राह्मण -आत्माये अपने तन-मन की मेहनत से प्रोग्राम्स बनाते हो, स्टेज तैयार करने हो, निमंत्रण कार्ड छपाते हो, कोई वी.आई. पी. को बुलाते हो, रेडियो, टी. वी. वालो को सहयोगी बनाते हो, धन भी लगाते हो।

✍️..② लेकिन बाद में अ प ने तन- मन-धन की सेवाओं की स्वयं ऑफर करेंगे। आपकी मिन्नते करेंगे। मेहनत आप नहीं करेंगे, वह रिक्वेस्ट करेंगे कि आप हमारे पास आओ।

✍️..③ तब ही प्रत्यक्षता की आवाज़ बुलंद होगी और सबकी अटेंशन आप बच्चों द्वारा बाप तरफ़ जायेगी। वह ज्यादा समय नहीं चलेगा। सबकी नज़र बाप तरफ़ जाना अर्थात् प्रत्यक्षता होना और जय-जयकार के चारों ओर घंटे बजेगें। यह ड्रामा का सूक्ष्म राज़ बना हुआ है।

प्रश्न 4 :- बाप के अव्यक्त बनने के ड्रामा में कौन से गुप्त राज़ भरे हुए थे ?

उत्तर 4 :- ✍️ बाप के अव्यक्त बनने के ड्रामा में गुप्त राज़ निम्न प्रकार भरे हुए थे :-

✍️..① कई बच्चे सोचते हैं - कम से कम ब्रह्मा बाप छुट्टी तो लेके जाते। तो क्या आप छुट्टी देते? नहीं देते ना। तो बलबान कौन हुआ? अगर छुट्टी लेते तो 'कर्मातीत' नहीं बन सकते।

✍️..② क्योंकि ब्लड-कनेक्शन से पदमगुणा ज्यादा आत्मिक-कनेक्शन होता है। ब्रह्मा को तो कर्मातीत होना था। या स्नेह के बंधन में जाना था? ब्रह्मा बाप भी कहते हैं - ड्रामा ने कर्मातीत बनाने के बंधन में बाँधा। और

बाँधा कितने टाइम में ! समय होता तो और पार्ट हो जाता। इसलिए घड़ी का खेल हो गया।

✍️.. ③ बच्चों को भी अन्जान बना दिया, बाप को भी अन्जान बना दिया। इनको कहते हैं - वाह, ड्रामा वाह! ऐसा है ना। जब "वाह, ड्रामा वाह" है तो कोई संकल्प उठ नहीं सकता। फुलस्टाप लगा दिया ना ! नहीं तो कम-से-कम बच्चे पूछ तो सकते थे कि क्या हो रहा है ? लेकिन बाप भी चुप, बच्चे भी चुप रहे। इसको कहते हैं - ड्रामा का फुलस्टाप।

प्रश्न 5 :- इस स्मृति दिवस पर विशेष सदा समर्थ बनने का कौन-सा श्रेष्ठ संकल्प किया ?

उत्तर 5 :- ✍️ इस स्मृति दिवस पर विशेष सदा समर्थ बनने का निम्न लिखित श्रेष्ठ संकल्प किया :-

✍️.. ① सदा समर्थ बनने का श्रेष्ठ संकल्प यह है व्यर्थ संकल्प, बोल, सब रूप से व्यर्थ को समाप्त करने का दिन है। जब नालेज मिल गई कि व्यर्थ क्या है, समर्थ क्या है- तो नालेजफुल आत्मा कभी भी समर्थ को छोड़ व्यर्थ तरफ नहीं जा सकती । और जितना स्वयं समर्थ बनेंगे उतना औरों को समर्थ बना सकेंगे। ६३ जन्म गँवाया और समर्थ बनने का यह एक जन्म है। तो इस समय को व्यर्थ तो नहीं करना चाहिए ना!

✍️..② अमृतवेले से लेकर रात तक अपनी दिनचर्या को चेक करो। ऐसे नहीं कि सिर्फ रात्रि को चार्ट चेक करो लेकिन बीच-बीच में चेक करो, बार-बार चेक करने से चेंज कर सकेंगे। अगर रात को चेक करेंगे तो जो व्यर्थ गया वह व्यर्थ के खाते में ही हो जायेगा। इसलिए बापदादा ने बीच-बीच में ट्रैफिक कंट्रोल का टाइम फिक्स किया है ।

✍️..③ अपना नियम बना रहना चाहिए । चाहे टाइम कुछ बदली हो जाय लेकिन अगर अटेंशन रहेगा तो कमाई जमा होगी। उस समय अगर कोई काम है तो आधे घण्टे के बाद करो लेकिन कर तौ सकते हो। घडी के आधार पर भी क्यों चलो।

✍️..④ अपनी बुद्धि ही घड़ी हैं, दिव्य बुद्धि की घड़ी को याद करो। जिस बात की आदत पड़ जाती है तो आदत ऐसी चीज है जो न चाहते भी अपनी तरफ खीचेगी । जब बुरी आदत रहने नहीं देती, अपनी तरफ आकर्षित करती है तो अच्छे संस्कार क्यों नहीं अपना बना सकते। तो सदा चेक करो और चेंज करो तो सदा के लिए कमाई जमा होती रहेगी।

FILL IN THE BLANKS:-

(ड्रामा, ऊँची, निमंत्रण, चल, सेवा, स्वयं, संकल्प, बडा, आत्माओं, बच्चे, लवलीन, तीव्रगति, प्यार, परिवर्तन)


1 चारों ओर' के देश-विदेश के _____ आज _____ के सागर में _____ है।

.. बच्चों / प्यार / लवलीन

2 ब्राह्मण _____ में श्रेष्ठ _____ द्वारा _____ से वृद्धि हुई।

.. आत्माओं / संकल्प / तीव्रगति

3 आगे _____ आप _____ वी.आई.पी. हो जायेंगे। आपसे _____ कोई दिखाई नहीं देगा।

.. चल / स्वयं / बड़ा

4 आपकी _____ स्टेज _____ की स्टेज के _____ दिलायेगी।

.. ऊंची / सेवा / निमंत्रण

5 परिवर्तनशील _____ पार्ट को भी _____ कर देता है।

.. ड्रामा / परिवर्तन

सही गलत वाक्यों को चिन्हित करें:- [✓] [✗]

1 :- सबके दिल का स्नेह आपके दिल में संकल्प उठते ही बापदादा के पास अति तीव्रगति से पहुँच जाता है। [✓]

2 :- बुद्धि का परिवर्तन हुआ, संपर्क में आये असहयोगी बने। [✗]

 .. बुद्धि का परिवर्तन हुआ, संपर्क में आये सहयोगी बने।

3 :- बनी...बनाईं स्टेज पर दूसरे लोग आपको निमंत्रण नहीं देंगे। [✗]

 .. बनी...बनाईं स्टेज पर दूसरे लोग आपको निमंत्रण देंगे।

4 :- अभी आप ब्राह्मण-आत्माओं की ऊँची स्टेज सदाकाल की बन रही हैं। [✓]

5 :- जो समय के महत्व को जानते हैं वह स्वतः ही महान बनते हैं। [✓]